कुरआन तो ईमान बताता है इन्हें
شعب الایمان
ईमान यह कहता है मेरी जान है यह
ईमान की शाख़ें
जिनके बग़ैर ईमान मुकम्मल नहीं
मोअल्लिफ़
मुफ़क्किरे इस्लाम हज़रत सैय्यद मोहम्मद अहसन मियां साहब
तकब्बुर
गीबत
हराम ख़ोरी
ज़िना
हुब्बे जाहो जलाल
चुगली
ख़ुदबीनी
रिश्वतख़ोरी
धोका व फ़रेब
हसद
कीना व अदावत
निफ़ाक़
झूट
ईमाने नाक़िस
रोज़ा
नमाज़
तहारत
ज़कात
यक़ीन
महब्बते रसूल
तवाज़ो
सदका
तवक्कुल
सब्रो तहम्मुल
इख़्लास
अमर बिल मारूफ़
ख़ौफ़े ख़ुदा
तिलावत कुरआन
नही अनिल मुन्कर
शफ़कत व मोहब्बत
ईमाने कामिल
नाशिर
जमाअते मुस्तफ़ा तब्लीग़ी तालीमी सोसायटी जामिया फ़ातिमा शाहजहाँपुर

ईमाँ यह कहता है मेरी जान है यह
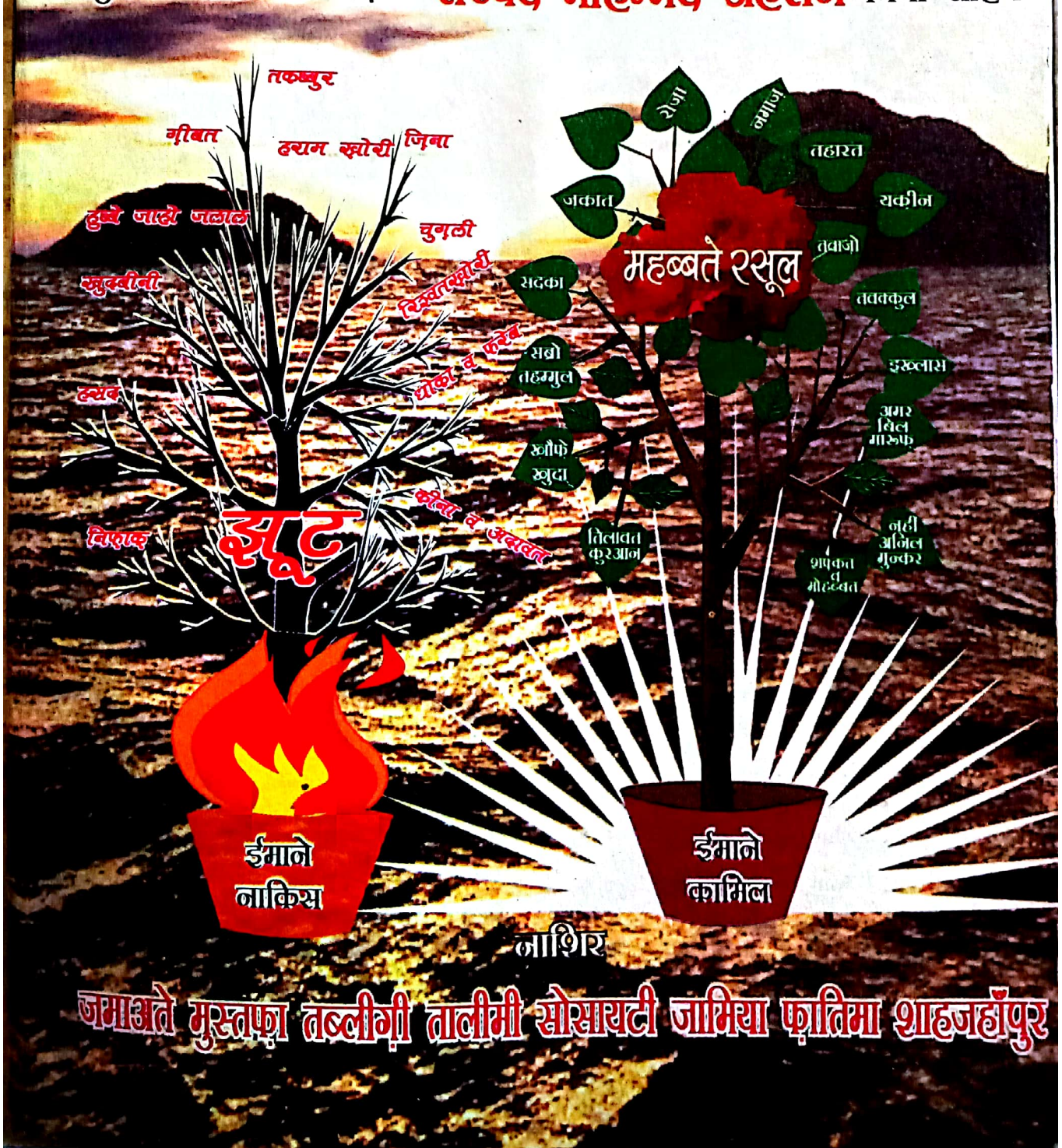
اَلَا لَا اِیْمَانَ لِمَنْ لَا مَحَبَّةَ لَهٗ

तालीमाते इस्लाम का वाजेह बयान

बनाम

ईमान की शाखें

जिनके बगैर ईमान मुकम्मल नहीं

मोअल्लिफ

मुफ़क्किरे इस्लाम हज़रत

सैय्यद मोहम्मद अहसन

मियां साहब

नाशिर

जमाअते मुस्तफ़ा तब्लीग़ी तालीमी सोसायटी

जामिया फ़ातिमा शाहजहाँपुर

नाम किताब :ईमान की शाखें

मुसन्निफ :मुफक्किरे इस्लाम हजरत सैय्यद मोहम्मद अहसन मियां साहब

नाशिर :जमाते मुस्तफा तबलीगी, तालीमी सोसायटी जामिया फातिमा शाहजहाँपुर

सन्ने तबाअत :माहे सफर 1433 हि0 मुताबिक जनवरी 2012ई

तादाद :पांच हजार (5000)

मिलने का पता

जामिया फातिमा

जलालनगर शाहजहाँपुर

www.jamiafatima.org
fatimagic1204@gmail.com.

मजामीन किताब

पेज	मजामीन	पेज	मजामीन
क	दीन सीखने सेही आयेगा	13	किस्मे अव्वल
ख	मुसन्निफ की खिदमात व मसरूफियात	14	हदीसे उलूहियत
		15	मोमिन गर मोमिन
1	सबबे तरतीब	17	जाने ईमान
4	ईमान के तकाजे	21	किस्में दोम
5	मोमिन के औसाफ	22	किस्में सोम
6	इन्सानी जिन्दगी	24	दुसरी किस्म
6	अहकाम की दो किस्में हैं	24	तीसरी किस्म
7	ईमान के शाखें	25	तम्बीह
8	वजाहत	26	तौहीद और उसकी शाखें
9	हदीस की जामईयत	28	कुरआन के आईने में मोमिन कौन?
9	हैया	29	आयत का खुलासा
10	अल्लाह तआला से हैया	30	हदीसे खौफ
10	अल्लाह तआला से हैया किस तरह करें?	31	हर अमल की एक खासियत और उसका एक असर है
11	ईमान के दो दर्जे	32	हुस्ने अम्ल और नुसरते इलाही
13	ईमान की शाखें		

दीन सीखने से ही आयेगा

किसी भी हुनर वाले को हुनर बिला सीखे नहीं आता है। बढ़ई को बढ़ई गीरी, दर्जी को दर्जी गीरी और तबीब को हिकमत व डाक्टरी बिला सीखे और किसी को उस्ताद बनाये बगैर नहीं आती तो फिर दीन का अजीम इल्म बिला सीखे पढ़े और बिला उस्ताद बनाये कैसे हासिल हो सकता है? क्या आपने कभी गौर किया कि दीन सीखने में आपने अपना उस्ताद किसको बनाया? या दीन सीखने और पढ़ने के लिए आप कितना वक्त निकालते हैं? वीडियो, टेलीवीजन, रोजनामे और अखबारात, को देखने और पढ़ने में आप कितना वक्त बर्बाद करते हैं जबकि आज कल के प्रिन्ट और इलेक्ट्रानिक मीडिया में नफ्स में हैजानी कैफ़ियत पैदा करने वाली फहश व उरियां तस्वीरें और जज्बातो ख़्वाहिशात को भड़काने वाले मोहलिक मजामीन होते हैं। हमारे बाज इस्लामी भाई बहन तो ऐसे है कि जब तक वह सुबह को पूरा अखबार नजर से चाट न लें तो शाम का खाना हजम नहीं होता। अखबार और टेलीवीजन ही का नतीजा है कि हमारे बजुर्ग, नौजवान और बच्चों से क्रिकेट प्लेयर्स, फिल्मी अदाकारों, और दुनिया के हुक्मरानों और सरबराहों के नाम और उनकी पूरी जिन्दगी के हालात पूछो तो फौरन बता देंगे। लेकिन अगर अम्बिया अलैहिमुस्सलाम, सहाबा किराम, अहले बैते इजाम, अइम्मये अरबआ, और औलियाये किराम रजिअल्लाहु अन्हुम अजमयीन के अस्माये गिरामी और उनकी सीरतों के बारे में पूछो तो जवाब मिलेगा कि यह सब हम नहीं जानते (मआजअल्लाह) इल्ला माशाअल्लाह, जबकि उनकी जिन्दगियां और उनकी सीरतें हमारे लिए मियारे जिन्दगी हैं।

लिहाजा ऐ मेरे प्यारे भाइयो बहनो दीनी किताबें (इस्लामी लिटरेचर) पढ़ने पढ़ाने के लिए सुबह व शाम में से थोड़ा सा वक्त निकालो और मोअतबर उल्मायेदीन की किताबें पढ़ो।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुसन्निफ की खिदमात व मसरूफियात

हजरते मुसन्निफ (اطال اللہ عمرھم ومد علینا ظلھم) 1999 ई0 में शाहजहांपुर तशरीफ लाये। और मकसद सिर्फ दीन की इशाअत और कौम को जिहालत व पस्ती से निकालना था। जिसके लिए हजरत ने बे पनाह कोशिशें और मेहनतें की और तरह तरह की आजमाइशात व मुश्किलात का सामना किया और अल्लाह तआला ने साबित कदम रखा अल्लाह तआला ने उसी का यह अज्र व सिलाह दिया है कि आज हजरत की जेरे निगरानी शाहजहाँपुर और बरेली में इस वक्त तीन मदारिसे इस्लामिलया और तीन असरी इदारे कामियाबी के साथ चल रहे हैं। शाहजहाँपुर में जामिया फातिमा जिसका संगे बुनियाद 1999ई0 में अमल में आया, फातिमा शरीअत कालिज जो 2003ई0 में कायम किया गया, फातिमा हाई स्कूल और फातिमा गर्ल हाई स्कूल, जिनमें तकरीबन 2000 मकामी और हिन्दुस्तान के मुख्तलिफ सूबों के बच्चे बच्चियां इल्म हासिल कर रहे हैं। और 2009 में कुछ अहबाब के इस्रार पर नरियावल बरेली नेशनल हाईवे पर 28बीघे जमीन लेकर फातिमा शरीअत कालेज और फातिमा लयान पब्लिक स्कूल का संगे बुनियाद उल्मा के हाथों रखवाकर 2011 ई0 में तालीम का आगाज भी करा दिया। जिसमें अल्हम्दुलिल्लाह पहले ही साल तकरीबन 400 बच्चे बच्चियां और एक बासलाहियत उल्माये दर्सो तदरीस में मशगूल है। हजरत मुसन्निफ (دامت برکاتھم القدسیۃ) का इरादा अब इसमें 1000 बच्चियों के हास्टल की तामीर कराने का है। अल्लाह रब्बुलइज्जत के करम और कौम के तआव्वुन का इन्तेजार है।

इसके अलावा दर्सो तदरीस की मशगूलियत और दावतो तबलीग के दौरो की मसरूफियत है। जिसकी वजह से यह किताब जिसको साल गुजिश्ता ही आजाना चाहिये था, एक साल बाद आरही है। और फजाइले इस्लाम की तरतीब का काम भी बहुत आहिस्तगी से हो रहा है। जिसको मुसन्निफ ने किताबुल ईमान से शुरू किया है। ईमानो ईमानियात, इबादात, मामलात, और अखलाकियात तक के

फजाइल 360 अबवाब, और हर बाब पांच मजलिसों पर मुश्तमिल हो इस तरह कुल 1800 मजालिस तरतीब देकर इमाम व मुबल्लिग के लिए आसानी पैदा करने का इरादा किया है। ताकि अगर हर नमाज के बाद दो चार मिनट की एक नशिस्त हो तो एक मजलिस काफी हो। और अगर किसी जल्से व मिलाद में बयान की हाजत हो तो एक बाब काफी। वैसे तो हर मोमिन अपने अहले खाना (Faimly) को लेटने से पहले एक मजलिस सुना कर अपना और उनका ईमान ताजा कर सकता है। अल्हम्दुलिल्लाह उसकी पहली जिल्द किस्ते अव्वल के तौर पर(जोकि किताबुल ईमान के बाबुत्तौहीद पर मुश्तमिल है, जिसमें तकरीबन 300 मजालिस हैं। जेवरे, तबाअत से आरासता होकर आपकी खिदमत में आरही है।(इन्शाअल्लाहतआला) अल्लाह तआला से दुआ करें कि जल्द से जल्द पायेतक्मील तक पहुंचे। आमीन।

सबब तरतीब

इल्म व अकीदा अमल से मुतअल्लिकः–

आज मुसलमानों में कई तरह की बीमारियां और कमियां पैदा हो गयी हैं जिनका दूर करना अजहद जरूरी हो गया है। आज आप देखिये मुसलमानों में आपस में इख़्तिलाफ़, इन्तिशार, निफाक, उरियानियत व बे हयायी, मर्द व जन में इख़्तिलात, बदअकीदगी, बदअमली, मां बाप की नाफरमानी, इस्लामी निजाम पर न चलना, वहदत व यकताई की कमी, मस्जिद व मदरसा से दूरी, उल्मा से नफरत, दीन व मजहब से बेजारी, दीन की बुनियादी बातों से ला इल्मी और उनसे जेहालत व गफलत व ला परवाही वगैरह आम सी कमियां व बीमारियां हो गयी हैं। अल्लाह रब्बुल इज़्जत जिन से दीन का काम लेता है उन नफूस जकिया;साफ दिलद्ध के अन्दर ऐसी कुव्वत व हिकमत डाल देता है कि वह इन बीमारियों को ताड़ भी लेते हैं और दूर करने के लिए हर मुकाबले को तैयार भी रहते हैं। जैसा कि हमारे बुजुर्गो ने दावत व इरशाद और तकरीर व तहरीर से करके दिखा दिया। उन्हीं की गुलामी में यह नाकिस भी सई नाकिस कर रहा है।

2010ई0 में बुखारी शरीफ पढ़ने पढ़ाने का इत्तेफाक हुआ। दौराने मुताला उम्दतुकारी देखने का मौका मिला। जब हदीस शोअबुल़ ईमान पर पहुंचे तो इसमें तमाम शोअब ;शाखों द्धके माबैन बड़ी उम्दा तरतीब देखी उसी वक्त इरादा बना लिया कि एक रिसाला उर्दू में तरतीब देकर ईमान की तमाम शाखों को बयान करेंगे। मगर मसरूफियत या गफलत ने मौका नहीं दिया और मामला यूँ ही टलता रहा। फिर मैने मौलवी सैय्यद आल–ए– मुस्तफा सल्लमहु से कहा जो कि उस वक्त बुखारी शरीफ उस्ताद ग्रामी हजरत अल्लामा मौलाना सैय्यद आरिफ साहब किब्ला साबिक शेखुल हदीस मन्जरे इस्लाम से पढ़ रहे थे, मगर वह अपनी किताब मकामे इल्म में मसरूफ रहे मैने दोबारा इनसे कहा भी नहीं मामला फिर

टल गया।

अभी मुहर्रमुल हराम 1433हि0 की दो दिन की छुट्टी में जेरे तबआ किताब फजायेल इस्लाम जिसके चन्द अब्वाब 2009ई में तरतीब दिये थे, की कम्पोजिंग तिलमीज़ रशीद मौलाना मौलवी मोहम्मद आमिल सल्लमहु करा रहे थे तो इस में नजर सानी के दौरान ईमान की बत्तीश शाखों वाली हदीस पर नजर पड़ी, तो अचानक उम्दतुकारी की तरतीब बैनुल शअब फिर याद आगयी। अब इस काम को न टालते हुये इसकी तरतीब व तस्नीफ का अज्म मुसम्म कर लिया और इस पर काम भी शुरू कर दिया। इन दोनो हजरात(जैद उल्माहुमा व उम्रा हुमा) ने मेरी मदद की और बफजलेही तआला एक हफ्ता में तरतीब दिया हुआ यह ईमान की तमाम शाखों को इजमाली तौर पर बयान करने वाला रिसाला आप के हाथों में आगया। लो नाखुन कटाकर शहीदों में नाम लिखा लिया हमने।

सैय्यद मोहम्मद अहसन

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلّی عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْم

امـــــابعـــــد

نَحْمَدُہٗ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِہِ الْکَرِیْم

امـــا بعـــد

فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطَانِ الرَّجِیْم

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم

یَا اَیُّھَا الَّذِیْنَ آمَنُوا ادْخُلُوْا فِی السِّلْمِ کَافَّۃً

ऐ ईमान वालों पूरे पूरे इस्लाम में दाखिल हो जाओ। कुरआन करीम की इस आयत मुबारका में थोड़ा सा गौर करें तो यह हकीकत हम पर खुल जायेगी कि ईमान महज़ रसमन जुबान से "ला इलाहा इल्लल्लाह" पढ़ लेने का नाम नहीं बल्कि अज रूये अकीदा दिल से तस्दीक करने के साथ साथ उन तमाम पाबन्दियों को मन व अन कबूल कर लेने का नाम है। जो अल्लाह तआला और उसके प्यारे रसूल सल्लल्लाहो अलैहिवसल्लम की तरफ से हम पर आयद होती हैं। आयते करीमा में अहले ईमान से खिताब फरमाते हुये अल्लाह रब्बुलइज्जत ने मुकम्मल तौर पर इस्लाम में दाखिल होने का हुक्म किया। पूरा पूरा इस्लाम में दाखिल होने का मतलब यह है कि हमारी जिन्दगी का हर गोशा आगाज़ से लेकर अन्जाम तक इस्लामी हुक्म और इस्लामी अदब के दायरे में हो। हमारी जिन्दगी के तमाम आमाल और अहवाल इबादात हों या मआसियात उठना व बैठना, खाना व पीना, तालीम व तिजारत, हुकूमत व सल्तनत, दोस्ती व दुश्मनी, गर्ज कि निजी जिन्दगी हो या कौमी व इजतिमायी जिन्दगी , जिन्दगी के हर गोशे में इस्लामी अहकाम की झलक हो और अल्लाह अज्जा व जल्ला और रसूल सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम के हुक्म के दायरे मे हो। और यह सब कुछ अल्लाह तआला और रसूल सल्लल्लाहो

अलैहिवसल्लम ही के लिए हो। जैसा कि अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया है।

قُلْ اِنَّ صَلَاتِیْ وَ نُسُكِیْ وَ مَحْيَایَ وَ مَمَاتِیْ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ.

तर्जुमा– और आप फरमा दीजिये बे शक मेरी नमाज मेरी कुर्बानियां और मेरी मौत व जिन्दगी सब अल्लाह रब्बुलइज्जत के लिए है।

जब हमारी मौत व जिन्दगी अल्लाह रब्बुल इज्जत के लिए है तो अल्लाह रब्बुल इज्जत के दायरे में होना चाहिये। जब तक हमारी जिन्दगी इस्लाम की तरफ से आयद की हुई पाबन्दियों को कबूल नहीं करती तो उस वक्त तक वह इन्कलाब हमारी जिन्दगी में जाहिर नहीं हो सकता जिस का इस्लाम हम से बहैसियत मुस्लमान मुतालिबा करता है। जिसका अमली नमूना अल्लाह तआला के हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दौरे पुरनूर में और खुल्फाये राशिदीन के दौर में नजर आता था। जुबान से इस्लाम का दावा कर देना बहुत सहल और आसान है। लेकिन अम्लन खुद को मोमिन बना के दिखाना बहुत मुश्किल और दुश्वार है।

ईमान के तकाज़े

अल्लाह रब्बुल इज्जत और उसके प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और किताबुल्लाह पर ईमान लाना कुछ तकाजे रखता है। जिनको पूरा करना हर मुसलमान पर लाजिम करार दिया गया है।.ताकि ईमान कहीं एक रस्म व रिवाज, दिखावा और जाहिरदारी बनकर न रह जाये जैसा कि आज हमारे अक्सर सुन्नी समाज मे हो रहा है। बल्कि इस्लाम के एहकाम व असरात और तकाजे बातिन में यूं सुरायत कर जायें कि मोमिन का उठना बैठना, सोना जागना, ओढ़ना बिछाना और जिन्दगी के सारे हालात इस्लाम की दौलत और ईमान के नूर से फैजेयाब और मुनव्वर हो जायें, और ईमान अपने नुकतये कमाल को

पहुंच जाये। फिर मोमिन का जिक्र अल्लाह तआला के जिक्र की तरफ मायल हो और अल्लाह–रब्बुलइज्जत का इश्तियाक इसमें पैदा हो। नूर ए ईमान की शान यही है। कि वह कल्ब को नरम करता है और नफ्स को उसकी तारीकियों और कदूरतों से साफ कर देता है। लेकिन ईमान को इसके नुकतये कमाल तक पहुंचाने के लिए कुछ अरकान व शरायत और कुछ आदाब हैं। जिनका पूरा करना एक मोमिन पर लाजिम व जरूरी है।

चूं मी गोयम मुसलमानम, बलरजम
के दानम मुश्किलाते ला इलाहा रा

यानि जब खुद को मुसलमान कहता। तो कांप जाता हूँ क्यूंकि मैं ला इलाहा इल्लल्लाह की मुश्किलात को जानता हूँ। अब मै वह अरकान व शरायत, औसाफ व आदाब और इस्लाम की शाखें जिनको कुरआन शरीफ और अहादीस नबविया में जगह जगह बयान किया गया है।इस रिसाले में इजमाली तौर पर बयान करूंगा। ताकि हर मोमिन और कल्मा गो मुसलमान अपने ईमान की जांच और परख कर कुरआन पाक की आयात और अहादीस से निकाली हुई शाखों के आईने में कर सकें।

मोमिन के औसाफ

इस्लाम अपने मानने वालों के अन्दर कुछ औसाफ व आमाल की मौजूदगी चाहता है और कुछ औसाफ और अफआल की अदम मौजूदगी पर जोर देता है। एक मोमिन की जिम्मेदारी है कि वह इन तमाम औसाफ और कमालात को अपने अन्दर पैदा करने की कोशिश करे जिन पर शरीअत और बानिये शरीअत ने जोर दिया है। और उन आमाले कबीहा और औसाफे शनीअह और खस्लाते रजीला व जमीमा से बचने की कोशिश करे जिन से किताब और सुन्नत में सख़्ती के साथ मना किया गया है।

गरज कि مَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا (तरजुमा— रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहुअलैहिवसल्लम) तुम्हें जो हुक्म दें उसे बजा लाओ और जिससे रोकें उससे रूक जाओ) पर पूरा पूरा अमल करे।

इन्सानी जिन्दगी

हमारी जिन्दगी के तमाम काम दो किस्म पर होते हैं। (1) वह जो हमारी ख्वाहिश और हमारी नफ्स के मुताबिक होते हैं।जैसे अपनी पसन्द का खाना अपनी पसन्द का पीना, खुद को आराम पहुँचाना, अपना रौब जमाना, अपनी बड़ाई जताना, दूसरे की हकतल्फी करना और अपने थोड़े से मफाद के लिए गिल्लत का या दूसरे मोमिन भाई का बड़े से बड़ा नुक़सान कर देना वगैरह वगैरह।

(2) वह काम जो हमारी ख्वाहिश और नफ्स की मर्ज़ी के खिलाफ होते हैं। जैसे ताअत व बन्दगी, मां बाप की फरमा बरदारी, बड़ों का अदब, छोटों पर शफकत, तवाज़ो व सच्चाई और अमानत व दयानत वगैरह। यह काम हमारी जरूरत के भी हैं। और इज्जत व शराफत के भी लेकिन नफ्स इससे कतराता है। मुसलमान को उसका मजहब तलकीन व ताकीद करता है जो काम उसकी नफ्स के मजे के लिए हैं। उससे खुद को बचाये क्योंकि नफ्स की मुखालफत ही सबसे बड़ी बन्दगी और इबादत है, और जो नफ्स की मर्जी के खिलाफ हैं। 'उनको इख्लास के साथ साथ बजा लाये। मगर इसके लिए खौफे खुदा और तसव्वुरे आख़िरत बहुत जरूरी है। इस बात को हर वक्त अपने तसव्वुरो ख्याल में रखे कि क़यामत के दिन अपने परवर दिगारे आलम के सामने हाजिर होकर जवाब देना होगा।

एहकाम की दो किस्में हैं।

कुरआन व हदीस में जिन औसाफो आमाल की हर मोमिन

में मौजूदगी जरूरी करार दी गयी है। जैसे फर्ज व वाजिब, सुन्नत और मुस्तहिब, वगैरह यह औसाफ मुस्बत हैं। और कुछ औसाफ व आमाल से हर मोमिन को बचने पर किताब व सुन्नत में जोर दिया गया है वह औसाफ मन्फी (छपहंजपअम) हैं। जिनको हराम, मकरूह तहरीमी, मकरूह तनजीही, इसाअत, खिलाफे औला, और नाजायज वगैरह अल्फ़ाज़ से ताबीर किया गया है।

ईमान की शाखें

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالیٰ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِ ﷺ قَالَ اَلاِیْمَانُ بِضْعٌ وَسِتُّوْنَ شُعْبَةً وَالْحَیَاءُ شُعْبَةٌ مِنَ الْاِیْمَانِ.

(کتاب الایمان بخاری شریف)

हजरत अबूहुरैरह रजिअल्लाहुतआला अन्हु नबी सल्लल्लाहुअलैहिवसल्लम से रिवायत करते हैं कि आप सल्लल्लाहुअलैहिवसल्लम इरशाद फरमाते हैं ईमान की साठ से ज़्यादा शाखें हैं। और हैया भी ईमान की एक शाख है। अपने मफहूम को मुस्लिम और बुखारी के अलावा दूसरे अइम्माये हदीस ने इन अल्फ़ाज में बयान किया।

اَلْاِیْمَانُ بِضْعٌ وَسَبْعُوْنَ شُعْبَةً. وَاَفْضَلُهَا قَوْلُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَدْنَاهَا اِمَاطَةُ الْاَذٰی عَنِ الطَّرِیْقِ. وَالْحَیَاءُ شُعْبَةٌ مِنَ الْاِیْمَانِ.

यानी ईमान की सत्तर से ज्यादा शाखें हैं। और इनकी सबसे आला जड़ और बुनियाद ला इलाहा इल्लल्लाह है। और सबसे अदना तकलीफदह चीज का रास्ते से हटा देना और हया ईमान की एक शाख है।

इसी मफहूम को मुस्लिम और बुखारी के अलावा दूसरे अइम्मये हदीस ने इन अल्फ़ाज़ में बयान किया है। यानी ईमान की सत्तर से ज्यादा शाखें हैं और उनकी सबसे आला जड़ और बुनियाद ला इलाहा इल्ला है। और सबसे अदना तकलीफदह चीज का रास्ते से हटा देना और हया ईमान की एक शाख है। तिरमिजी की रिवायत में है ईमान

के सत्तर से ज्यादा दरवाजे हैं हजरत मुगीरा इब्ने अब्दुल्ला बिन उबैदा की रिवायत करदा हदीस में है

الْاِيْمَانُ ثَلَاثَةٌ وَثَلٰثُوْنَ شَرِيْعَةً. مَنْ وَافَى اللّٰهَ بِشَرِيْعَةٍ مِّنْهَا دَخَلَ الْجَنَّةَ यानी अल्ला अज्जावजल्ला के हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ईमान तैतीस (आमाले शरैइया व औसाफ दीनिया) का नाम है जो कोई उनमें से एक को भी अल्लाहतआला की रिजा के लिए पूरा करके जायेगा वह जन्नत में दखिल होगा एक और रिवायत में इस तरह बयान किया गया है

اِنَّ لِلّٰهِ مِائَةَ خُلُقٍ مَنْ اَتٰى بِخُلُقٍ مِنْهَا دَخَلَ الْجَنَّةَ: बेशक अल्लाह रब्बुलइज्जत के सौ खुल्कहाये करीमा हैं उनमें से एक को भी जो अपना लेगा वह जन्नत में दाखिल होगा (उम्दतुलकारी जि0–2)

वज़ाहत

इस हदीस के राबी अब्दुलवाहिद इब्ने जैद फरमाते हैं कि मुझसे इमाम अहमद ने फरमाया इस्हाक से पूछो कि अख़लाक (खुल्कुल्लाह) से यहां क्या मुराद है तो उन्होंने जवाब दिया कि इन्सान में कभी हया होती है कभी रहम का माद्दा होता है कभी सखावत का जज़्बा और कभी दरगुजर नरमी होती है यह सब अख्लाकुल्लाह हैं और इन्ही अख्लाको आदात को अपनाने का हमें हुक्म दिया गया है गर्ज कि इसतरह की जुमला रिवायात में चाहें वह लफ्ज शोअबा से या लफ्जे बाब से या लफ्जे खुल्क के साथ बयान की गयी हों सबकी मुराद यही है कि एक मोमिन में कमाले ईमान के लिए कुछ औसाफ और कुछ आमाल जरूरी हैं चाहें आप उनको ईमान की शाखें कह लें चाहे ईमान के दरवाजे या लफ्जे शरीअत से ताबीर कर लें आपके अन्दर वह तमाम औसाफ और आमाल पाये जायेंगे तभी आप अल्लाह अज्जावजल्ला व रसूलुहू सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नजदीक कामिल

मोमिन करार पायेंगे

हदीस की जामईयत

कुर्बान जाइये अल्लाह अज्जावजल्ला के हबीब सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम के कलामे बलीग पर यह हदीस मुबारक भी आपके कलाम बलीग के जवामेउल कलीम के कबील से मालूम होती है चूंकि बन्दा जिन अहकाम का मुकल्लफ है वह दो किस्म के हैं (1) वह जो हुकूकुल्लाह से मुतअल्लिक हैं (2) वह जो हुकूकुल्इबाद से मुतअल्लिक हैं आप सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने इस हदीस में तीन का जिक्र फरमाया (1) तौहीद–जिसका तअल्लुक हुकूकुल्लाह से है।

(2) इमाततुअजाअनित्तरीकी–जिसका तअल्लुक हुकूकुलइबाद से है (3) हया–जिसका तअल्लुक हुकूकुल्लाह और हुकूकुलइबाद दोनो से है ।

हया

इस हदीसे मुबारक में ईमान के सतत्तर(77) या सत्तर शोअबों और शाखों में से अल्ला अज्जावजल्ला के हबीब सल्लल्लाहुअलैहिवसल्लम ने खास तौर पर हया को जिक्र फरमाया इस लिए कि हया ही इन्सान में वह वस्फ है जो उसे दुनिया की रूसवाई और आखिरत की फज़ीहत से डराकर मासिअतो गुनाह से बाज़ रखता है और ताअत व बन्दगी पर उभारता है। बहुत से गुनाह जैसे ज़िना, चोरी, लवातत, फ़हशगोई, बरहन्गी, और गाली गलौज वग़ैरह इनसे आदमी दुनिया की रूस्वाई के ख़ौफ से बचता है। और बहुत से नेक काम भी जैसे नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात, सदक़ा, ख़ैरात, और सदाक़त व दयानत आखिरत की शर्म की वजह से करता है। फारसी का एक मकूला है बेहया बाश हरचे ख़्वाही कुन, यानी तू बेहया होजा फिर जो चाहे कर एक हदीस शरीफ में वारिद है اَلْحَيَاءُ لَا يَاتِي اِلَّا بِخَيْرٍ यानी हयादार

से बेहतर ही काम होते हैं एक और रिवायत में है अलहयाओ खैरून कुल्लोहु ,हया में नरमी भलाई ही भलाई है (उम्दतुकारी जि0–2)

अल्लाह तआला से हया

दुनिया और समाज में देखा जाता है कि आम तौर से लोग मासियत और गुनाह के कामों से इन्सानों से शर्म व हैया की वजह से बचते हैं। हालांकि अल्लाह रब्बुलइज्जत जो हमारा खालिक व मालिक है वह इस बात का ज्यादा मुस्तहिक है कि हम उसके खौफ से गुनाह व मासियत के कामों से बचें वह इस तौर पर हमारे ऊपर यह तसव्वुर ग़ालिब रहे कि हमारा मौला हमें गुनाह की हालत में कहीं देख न ले लेकिन ये कैफियत बन्दे को बिला मार्फत और मुराकबे के हासिल नहीं होती है। और मार्फत व मुराकबा किसी कामिल की सोहबत के बगैर मयस्सर आना मुश्किल है शायद इसी मफहूम की तरफ अल्लाह तआला के हबीब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने कौल (मिश्कात) اَنْ تَعْبُدَ اللّٰہَ کَاَنَّکَ تَرَاہُ فَاِنْ لَمْ تَرَاہُ فَاِنَّہٗ یَرَاکَ में इशारा फरमाया यानी तुम अल्लाह माबूद बरहक की इबादत व बन्दगी इस तौर पर करो कि गोया तुम उसे देख रहे हो। और अगर तुम उस को नहीं देख सकते हो तो इतना तो जरूर यकीन कर लो कि वह तुमको देख रहा है और जब (खुदा हमें देख रहा है) का तसव्वुर गालिब रहेगा तो गुनाह नहीं होगा।

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला से हया किस तरह करें

हजरत इमामे तिरमिजी ने एक हदीस की तखरीज फरमाई है।

فَقَالَ لَیْسَ ذٰلِکَ وَلٰکِنَّ الْاِسْتِحْیَاءَ مِنَ اللّٰہِ تَعَالٰی حَقَّ الْحَیَاءِ اَنْ
اِسْتَحْیُوا مِنَ اللّٰہِ تَعَالٰی حَقَّ الْحَیَاءِ. قَالُوْا اِنَّا نَسْتَحْیِیْ وَ الْحَمْدُ لِلّٰہِ.
تَحْفَظَ الرَّاْسَ وَمَا حَوٰی وَالْبَطْنَ وَمَا وَعٰی، وَتَذْکُرَ الْمَوْتَ وَالْبِلٰی. فَمَنْ فَعَلَ ذٰلِکَ فَقَدْ اِسْتَحْیٰ مِنَ اللّٰہِ حَقَّ الْحَیَاءِ.

तर्जुमा– सरकार सल्लल्लाहु अलैहि–वसल्लम ने सहाबा से फरमाया अल्लाह–रब्बुल इज्जत से हत्तलमकदूर हया करो

तो सहाबा ने अर्ज किया , अल्लाह–तआला के करम से हम अल्लाह अज्जा व जल्ला से हया करते हैं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि–वसल्लम ने फरमाया (सिर्फ जुबान से कहना ही हैया नहीं है।) बल्कि असल हया तो यह है कि तुम अपने सर की हर चीज़(यानी आंख कान जबान) की हर बुराई से हिफाजत करो और अपने पेट और शर्मगाह की हर हराम व फहश से हिफाजत करो और मौत और कब्र में खाक में मिलने को याद करो। जिस ने यह सब कुछ कर लिया उस ने अल्लाह अज़्ज़ा–व–जल्ला से सच्ची हया की। हजरत सैय्यदुना जुनैद बगदादी सैय्यदुत्तायेफा रहमतुल्लाह अलैह हया की तारीफ करते हुये फरमाते हैं।अल्लाह रब्बुलइज्जत की नेमतहाये अजीमा व जलीला को देख कर और अपनी अमली कोताहियों के तसव्वुर से बन्दे पर जो मिली जुली कैफियत तारी हो उसी का नाम हया है। लेकिन यह कैफियत उसी मोमिन पर तारी होगी जिसका ज़मीर जि़न्दा हो और उसे अपनी जिम्मेदारी का एहसास भी हो। (उम्दतुलकारी ज 2)

ईमान के दो दर्जे

एक ईमान का आला दर्जा है और दूसरा अदना जो मोमिन बन्दा जिन ताअत और अहकाम का मुकल्लफ बनाया गया है वह अगर फजले मौला से उन सबको बजा लाता है तो वह कामिल दर्जा पर फायज है और कामिलुलईमान मोमिन है। और अगर कोई बन्दा अपनी कम किस्मती से उन सब पर आमिल नहीं बल्कि बाज पर अमल करता है या तौहीद व रिसालत पर कायम है तो वह भी इन्दश्शराह मोमिन होगा। नफ्से ईमान के लिए न तो ईमान के औसाफ और उसकी शाखों का बित्तफसील जानना जरूरी है और न हर एक को उनके नाम के साथ याद करना जरूरी है बस इतना जानना काफी है कि जो अल्लाह रब्बुलइज्जत और उसके प्यारे हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किताब व सुन्नत मे

फरमाया वह हक है लेकिन ईमान का तकाजा यह है कि हर मोमिन को रोज बरोज अपने ईमान में कुव्वतो तवानाई पैदा करने के लिए उन आमालो औसाफ को जानकर उन पर अमल की कोशिश करनी चाहिये जिनसे ईमान में कुव्वतो जिला पैदा होती है। जिस तरह से हमारा जिस्म जिस्मानी गिजाओं के इस्तेमाल से कुव्वतो तवानाई हासिल करता है इसी तरह से हमारी रूह हमारा ईमान और हमारा जमीर नमाज रोजा और जिक्र व तिलावत जैसे आमाले हसना से कुव्वतो तवानाई और जिला पाते हैं इस लिए अल्लाह ताआला के हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन औसाफो आमाल और ईमान की शाखों को बयान फरमा दिया ताकि उनको हम बित्तफसील जानें और उन पर अमल करें अल्लाह ताआला के हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने फरमान में ईमान की शाखों में सबसे आला दर्जा तौहीद यानी लाइलाहा इल्लल्लाहु मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह को करार दिया जो हर मुकल्लफ मोमिन पर लाजिम व जरूरी है कि उसके बगैर इनदश्शराह कोई अमल सही व दुरूस्त नहीं और सबसे अदना दर्जा दूर कर देना और दफा कर देना उस चीज का जिससे अहले इस्लाम को नुकसान व जरर पहुंचने का एहतेमाल व अन्देशा हो अब उन दोनों के बीच में ईमान के बहुत से औसाफ व आमाल और शाखें हैं हर कामिलुल ईमान मोमिन को चाहिये कि उन औसाफोआमाल और शाखों को तलाश करे और उन पर अमल करे हमारे बहुत से बुजुर्ग उलेमा ने उन सबको एक जगह किताबी शक्ल में जमा फरमाया है इमाम अबूअब्दुल्ला हलीमी ने एक किताब तसनीफ फरमायी उसमें उन तमाम शाखों को जमा फरमाया और उसका नाम रखा फवायदुल मिन्हाज इमाम हाफिज अबूबक्र बैहकी रहमतुल्लाह अलैह ने एक किताब तस्नीफ फरमायी जिसका नाम रखा शोअबुल ईमान और इमाम अबूहातिम रहमतुल्लाह अलैह ने एक किताब तस्नीफ

फरमायी जिसका नाम वस्फुलईमान वशशोअबा रखा। और यह फकीर बुखारी की शरह उम्दतुलकारी और फतहउल्बारी और अहादीस की दीगर किताबों से छानबीन कर उन औसाफ और शोअब (यानि ईमान की शाखों) को आपकी खिदमत में पेश करने की नाकिस सई कर रहा है। जिसका नाम रखता है "ईमान की शाखें" (इन्शा अल्लाह अज्जावजल्ला वाअला)

ईमान की शाखें

अल्लामा इमाम बदरूद्दीन ऐनी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं असल ईमान तो तसदीक बिल्कल्ब और इकरार बिल्लिसान है। लेकिन रहा कामिल, ताम और मुकम्मल ईमान तो वह तस्दीक बिल्कल्ब, इकरारबिल्लिसान और अमल बिल्अरकान तीनों का नाम है। और इसको ऐसे भी कह सकते हैं कि जो कुछ अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लेकर आये। उसकी तस्दीक उसका इकरार और उसकी तामील कमाल-ईमान है।

किस्में अव्वल

इन एहकाम के बयान में जिनका तअल्लुक अकीदे से है यानी इन्हें सिर्फ मानना है, एक अकीदा कायम करना और एक आस्था बनाना है कुछ करना नहीं इन एहकाम की तकरीबन तीस(30) शाखें हैं। जो मन्दर्जा जेल हैं।

1- तौहीद उनमें की पहली शाख तौहीद यानी ला इलाहा इल्लल्लाह है अल्लाह रब्बुलइज्जत की जात और उसकी सिफात पर ईमान लाना और इस बात की तस्दीक करना कि अल्लाह रब्बुलइज्जत अपनी जात अपनी सिफात अपने एहकाम और अपने अफआल में बे मिस्ल व बेमिसाल है कि उसकी जात उसका कोई वस्फ उसका कोई हुक्म और उसका कोई फेल बन्दों की तरह नहीं सही तो यह है कि तौहीद वह एक

ऐसा समुन्दर है जिसका कोई किनारा नहीं लेकिन शरीअत की इस्तिलाह में वह ईमान है जिसका दूसरा नाम तस्दीक बिल्कल्ब है और उस तस्दीक बिल्कल्ब में जो तौहीद का मफहूम है उसकी ताबीर और एयान शरीअत की जुबान में لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ يَا لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ से की जाती है एक कल्मा तैय्यबा लाइलाहा इल्लल्लाह का लफ्जी मफहूम जिसको करीब करीब सब जानते हैं कि अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं और वह एक है उसका हकीकी मफ्हूम जो मोमिन कामिल आरिफ को हासिल है वही हकीकत में ईमान का लुब्बेलबाब और खालिस तौहीद है क्योंकि उसकी नजर अपने मौला की जात के अलावा किसी और की तरफ नहीं होती है वह खूब जानता है कि उसकी पैदाइश का मकसद उबूदियत व बन्दगी के हकूक अदा करना है और वह लाइलाहा इल्लल्लाह के विर्द से अपने मौला की बारगाह में अपनी जिल्लत व मोहताजी और अपनी आजज़ी और ना पायेदारी का इजहार करता है चूंकि वह खूब जानता है कि पायदारी , इज्जत व अजमत, बुजुर्गी, किबरियाई व बड़ाई और बे नियाजी माबूदे हकीकी का खास्सा है इसीलिए वह लाइलाहा की जरब से अपनी अना और अपनी खुदी को फना कर देता है और इल्लल्लाह की जरब से अपने कल्ब को तौहीद के रंग में रंग लेता है जब मोमिन कामिल का कल्ब तौहीद के रंग से रंग जाता है तो फिर हर ताअतो बन्दगी उसके नफ्स पर आसान हो जाती है फिर वह दुनिया की बड़ी से बड़ी ताकत से नहीं डरता है और न बड़ी से बड़ी मुसीबत से घबराता है बल्कि सीना सिपर होकर उसका मुकाबला करता है ।

हदीसे उलूहियत

हजरते सैय्यदना अब्दुल्ला इब्ने अब्बास रजिअल्लाहो अन्हुमा

फरमाते हैं लाइलाहाइल्लल्लाह का मफहूम व मतलब यह है। कि अल्लाहतआला के सिवा कोई हकीकी तौर पर नफा व नुकसान का मालिक नहीं, और अल्लाह तआला के सिवा कोई हकीकी तौर पर इज्जत व जिल्लत देने का मालिक व मुख्तार नहीं और न जाती तौर पर कोई अल्लाहतआला के अलावा अता करने वाला है और न उसकी अता को कोई रोकने वाला है(नुजहतुलमजालिस)

मोमिन गर मोमिन

एक है इस्लाम में आजाना यानी किसी गैर मुस्लिम का मुसलमान हो जाना जैसा कि आमतौर पर लाइलाहाइल्लल्लाहो मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह पढ़कर लोग मुसलमान होकर इस्लाम के दायरे में आ जाते हैं और एक है इस्लामो ईमान का मोमिन के दिल में आजाना और यही तौहीदे हकीकी है चूकि मोमिन का दिल में आजाना यही तौहीद हकीकी है। चूकिं मोमिन का दिल अल्लाह अज्जावजल्ला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमा के रंग में रंग जाता है। उसके दिल पर वहदानियत व रिसालत का रंग छा जाता है और यह रंग जब मोमिन के दिल पर चढ़ जाता है तो दुनिया की बड़ी से बड़ी ताकत से भी नहीं उतरता जैसा कि मुश्रिकीने मक्का सारे जुल्म करने के बाद भी हजरते बिलाल व सुहैब रजिअल्लाहु तआला अन्हु के दिल से न उतार सके

2–अल्लाह रब्बुलइज्जत की वहदानियत और उसके यकता होने के साथ साथ इस बात का भी यकीन रखना कि अल्ला रब्बुलइज्जत के मासिवा जो भी कायनात है वह सब हादिस है यानि कुल कायनात पहले न थी फिर पैदा हुई और फिर एक दिन फना हो जायेगी।

3–मोमिन का इस बात पर भी यकीन रखना कि फरिश्ते अल्लाह रब्बुलइज्जत की एक नूरानी मखलूक हैं उनमें कुछ खास फरिश्ते कुछ खास कामों पर मुकर्रर हैं।

4-अल्लाह रब्बुलइज्जत की नाजिल कर्दा किताबों पर भी ईमान व यकीन रखना जो किताबें और सहीफे अल्लाह रब्बुलइज्जत ने अपने पैगम्बरों पर नाजिल फरमाये वह सब बरहक हैं उनमें चार किताबें बहुत मशहूर हैं। (1) तौरेत -हजरत मूसा अलैहिस्सलाम पर (2)इन्जील-हजरत ईसा अलैहिस्सलाम पर (3) जबूर-हजरत दाऊद अलैहिस्सलाम पर (4) और अखिरी किताब कुरआने करीम जो अल्लाह तआला ने हमारे पैगम्बर हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम पर नाज़िल फरमायी।

5- अल्लाहतआला के सब रसूलों और पैगम्बरों पर ईमानो यकीन इस तौर पर रखना कि अल्लाह रब्बुल इज्जत ने एक लाख चौबीस हजार कमोबेश पैगम्बर अलैहिमुस्सलाम अपने बन्दों की हिदायत के लिए मबऊस फरमाये उनमें आखिरी पैगम्बर हमारे नबी सैय्यदुल अम्बिया खातिमुन्नबीयीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। जिनके हम उम्मती और गुलाम हैं।

6-कज़ा व कद्र और तकदीर पर ईमान लाना कि हर अच्छी और बुरी चीज अल्लाह रब्बुलइज्जत की तरफ से है।

7-क़यामत के हक होने पर ईमान व यकीन रखना और इस बात पर भी यकीन रखना कि कब्र के सवालात हक हैं। कब्र का अजाब बरहक है और मरने के बाद दोबारा जिन्दा होना है। और यह कि हिसाब व किताब हक है मीजान यानी आमाल का तुलना हक है और पुल सरात से गुजरना हक है जो बाल से ज्यादा बारीक और तलवार से ज्यादा तेज है।

8- और इस बात पर भी यकीन रखना कि जन्नत हक है और इसमें मोमिन दाखिल होंगे और हमेशा रहेंगे (इन्शाअल्लाह तआला)

9- और जहन्नम के हक होने पर यकीन रखना। और इस बात पर कि उसमें सख्त से सख्त अजाब हैं और वह हमेशा

रहेगी कभी फना न होगी अल्लाह रब्बुलइज्जत से सच्ची और कल्बी मोहब्बत रखना।

11–अल्लाहतबारक वतआला के प्यारे हबीब मोहम्मदमुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सच्ची मोहब्बत और वालिहाना इश्क रखना जो कि जाने ईमान है।

लहद में इश्करूखे शै का दाग लेके चले
अंधेरी रात सुनी थी चराग लेके चले।

जान है इश्के मुस्तफा रोज फजूं करे खुदा
जिसको हो दर्द का मजा नाजे दवा उठाये क्यों

इसी शाख में आपकी मुहब्बत के साथ इश्क व मोहब्बत में डूबकर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दरूद पढ़ना और आपकी सुन्नते मुबारका की पैरवी भी हैं चूंकि जो सच्चे आशिक होते हैं वह अपने महबूब की अदाओं को तलाश कर उनको अपनाने और उन पर अमल की कोशिश करते हैं जैसा कि इस उम्मत की सबसे आला और अफजल जमात सहाबा इकराम रिजवानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन ने करके दिखाया।

12–अल्लाह रब्बुलइज्जत और उसके प्यारे हबीब सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वास्ते दूसरों से मोहब्बत करना यानी अल्हुब्बु फिल्लाहि वल्बुग़जुफिल्लाहि। अल्ला वालों से मुहब्बत अल्लाह और उसके रसूल के लिए हो। और अगर किसी से अदावत व दुशमनी हो तो अल्लाह व रसूल ही के लिए हो। और इसी शाख नम्बर 12 में दाखिल है अहले बैत, और सहाबा में अन्सारो महाजरीन रजिअल्लाहु तआला अन्हु और औलिया अज़्जाम से मोहब्बत करना और बातिल फिरको से अदावत

जाने ईमान

उमूरे आखिरत जन्नत दोजख वगैरह पर यकीन और अल्लाह रब्बुलइज्जत और उसके प्यारे हबीब सल्लल्लाहो अलैहि

वसल्लम से इश्को मुहब्बत यह मोमिन के ईमान की जान व रूह हैं। कि इन कुव्वतहाये अजीमा के आने के बाद मोमिन बड़े से बड़ा मारका सर कर सकता है बशर्ते कि अमले मुसल्सल हासिल हो।

यकीं मोहकम अमल पैहम मुहब्बत फातेह आलम
जिहादे जिन्दगानी में हैं यह मर्दों की शमशीरें

13—उन्हीं आमाले कल्बिया में से है मोमिन का अपने अमल में इस तौर पर मुख्लिस होना कि उसमें रिया और निफा का दुख़ूल न हो सके और इख्लासे अमल की अलामत व पहचान यह है कि मोमिन बड़ी से बड़ी नेकी और इबादत करने के बाद इस बात से लरजता और कांपता है कि मालिके बेनियाज बरोजे कयामत कहीं हमारी इबादत हमारे मुंह पर न मार दे।

14— मोमिन कामिल को चाहिये कि वह अपने गुनाहों से इस तौर पर तौबा करे कि जो हो चुके हैं उन पर नदामत व शर्मिन्दगी के आंसू बहाये और आइन्दा न करने का पक्का अहदो पैमान करे और सच्ची तौबा यह है कि अगर फराइजे इलाहिया उसके जिम्मे बाकी हों तो उनकी कजा करे हुकूकुलइबाद में से अगर किसी का माली हक मारा हो तो उसे अदा करे और अगर जिस्मानी या रूहानी या कल्बी अजीअत पहुंचाई हो तो उससे माफी मांगे।

15—जिन्दगी में अल्लाहतआला का खौफ बन्दे पर गालिब रहे उल्मा बयान फरमाते हैं। सब लोग खतरे में हैं मगर इल्म वाले और इल्म वाले भी खतरे में हैं मगर इल्म वाले। और इल्म वाले भी खतरे में हैं। मगर वह जो उनमे अमल वाले हैं अमल वाले भी खतरे में हैं मगर वह जो उनमें इखलास वाले हैं और इखलास वाले भी खतरे से खाली नहीं उनमें भी वही निजात याफता हैं जो खौफ वाले हैं।

16—मोमिन को चाहिये कि खौफ के साथ साथ

अल्लाहरब्बुलइज्जत की रहमते कामिला वसीया का हमेशा उम्मीदवार रहे बाज उल्मा फरमाते हैं जवानी और जिन्दगी में खौफ गालिब रहे बुढ़ापे और आखिरी वक्त में उम्मीद गालिब रहे।

17—अल्लाह रब्बुलइज्जत की राफतो रहमत से बिलकुल मायूस न हो।

18—शुक्रगुजारी का जज़्बा और शुक्र की अदायगी भी मोमिन का एक वस्फ़ अजीम है और इस वस्फ को अपने अन्दर बेदार करने के लिए मोमिन को चाहिये कि हर वक्त अल्लाह रब्बुलइज्जत के इनामातो व एहसानात को ध्यान में रखे और हमेशा अपनी अमली कोताहियो पर गौर करता रहे या दुनियवी माल व दौलत में अपने से छोटे पर नजर रखे और इबादतो बन्दगी हमेशा अपने से आला और बड़े को देखता रहे तो मुझे उम्मीद है कि इन्शा अल्लाह तआला उसके दिल में शुक्रगुजारी का जज्बा यकीनन पैदा होगा।

19—वफाये अहद चाहे अल्लाह रब्बुलइज्जत से हो या बन्दों से 20—सब्रो तहम्मुल—: चाहे व सब्र अनिलमासियत हो कि अपने नफ्स को गुनाहों से बचाना चाहे वह सब्र अलल मुसीबत हो या वह सब्र अलत्ताअत हो यानी खुदको या अपने नफ्स को ताअत व बन्दगी पर लगाना।

21—तवाजो—: मोमिन को चाहिये कि तवाजो इन्किसारी से काम ले और अपने से बड़ों की ताज़ीम व तौक़ीर में कोताही न करे बड़ों की तौकीर का जज्बा हर वक्त उसके दिल पर गालिब रहे

22—शफकतो रहमत का पैकर भी एक मोमिन को होना चाहिये अपने छोटों और बच्चों पर शफकत से एक मोमिन का दिल खाली नहीं होना चाहिये सैय्यदना अब्दुल्ला इब्ने अब्बास रजिअल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो हमारे बड़ों की

ताजीम और छोटों पर शफकत न करे तो वह हम मे से नहीं यानी वह मेरा सच्चा उम्मती नहीं।

23—रजा व कजा—: खुदावन्दे कुददूस की कजा व कद्र पर राजी रहना।

24—तवक्कुल—: यानी मोमिन अपने तमाम मामलात अल्लाह रब्बुलइज्जत के सपुर्द कर दे उनमें अल्लाह रब्बुलइज्जत के अलावा न किसी से उम्मीद रखे और न किसी का खौफ ये वह आमाले कल्बिया या मुस्बत (च्वेपजपअम) औसाफ हैं जिन पर मोमिन को अमल करना है या उनको अमल में लाना है अब मैं उन बाज आमाले कल्बिया और औसाफ मनफिया(छपहंजपअम) को जिक्र कर रहा हूं जिन से हर मोमिन को बचना लाजिम व जरूरी है वरना उनमें से बाज ऐसी खसलते रजीला हैं जो मोमिन की बड़ी से बड़ी नेकी को खा जाती हैं ।

25—उज्ब व तकब्बुर—मोमिन को चाहिये कि उज्बो तकब्बुर खुद बीनी और अपनी तारीफ बिल्कुल छोड़ दे वह बजाये इसके कि अपनी खूबियां देखे हर वक्त अपने नफ्स के उयूब और उसकी कमजोरियों की तलाश में रहे।

26— हसद—: मोमिन पर लाजिम है कि हसद को अपने दिल के करीब भी न फटकने दे हसद ही तो वह ऐब है कि जिसने इब्लीस को आबिद से शैतान बना दिया।

27— दूसरों से कीना ,खलिश और अदावत अपने करीब भी न आने दे जो खुदा वन्दे कुददूस की राह या उसकी मोहब्बत के मैदान के मर्द और कामिल मोमिन हैं वह कीना हसद अदावत और दुशमनी की परछाइयां भी अपने दिल पर नहीं पड़ने देते हैं। शेअर

शनीदम कि मर्दाने राहे खुदा
दिले दुश्मना हम न करदन्द तंग
तुरा कि मयस्सर बुवद ईं मकाम

के बा दोस्तानत खिलाफरत व जंग
सअदी शीराजी फरमाते हैं मैने सुना है कि मोमिन कामिल बन्दे दुश्मनों से भी लड़ाई झगड़ा नहीं करते तुमको यह कमाल कहां मयस्सर?
तुम तो अपने दोस्तों से भी लड़ाई झगड़ा रखते हो।
28—गजब बेजा और बे मौका गैजोगजब बिल्कुल छोड़ दे ।
29—धोका व फरेब— फरेब व धोका और दूसरों से बद्‌जनी और मकरो अय्यारी अपने करीब भी न आने दे।
30—माल की मोहब्बत तलबे जा और हुब्बे दुनिया जो तमाम गुनाहों की जड़ है मोमिन उसको बिलकुल छोड़ दे हदीस शरीफ में आता है حُبُّ الدُّنيَا رَاسُ كُلِّ خَطِيئَةٍ यानी दुनिया की मोहब्बत हर गुनाह की जड़ है एक हदीसे पाक में आता है رَاسُ الْحِكْمَةِ مَخَافَةُ اللهِ यानी हिकमत व दानाई की जड़ अल्लाह रब्बुलइज्जत का खौफ व खशिय्यत है यह तीस औसाफे कल्बिया या ईमान की कल्बी शाखें है अगर इनमें से आप पर का आला और अच्छा जैसे यकीन व मुहब्बत तौबा तवाजो इख्लास और वफा में से कोई वस्फ अपने अन्दर पाते हैं तो उस पर मौला की हम्द और उसका शुक्र अदा करें कि उसने आपको हुस्ने अमल की तौफीक दी और अगर खुदा न ख्वास्ता तकब्बुरो हसद और मकरो फरेब वगैरह में से कोई वस्फ रजील और बुरी शाख अपने अन्दर पाते हैं तो जल्द अज जल्द उससे तौबा करो अल्लाह रब्बुल इज्जत अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सदके हम सबको अपनी अमान में रखे।

किसमे दोम

यह तीस वस्फ या ईमान की शाखें वह थी जिनका तअल्लुक मोमिन के दिल से हैं किसमें दोम में वह आमाल या औसाफ या ईमान की शाखें हैं जिनका तआल्लुक इन्सान की जुबान से है या वह जुबान

का अमल हैं उसकी सात शाखें हैं।
1— कल्मये तैय्यबा— लाइलाहा इल्लल्लाहु का विर्द, या दीगर अजकारे मुबारका ।
2— तिलावते कलामें मजीद, 3—इल्म सीखना 4—दूसरों को इल्म सिखाना , 5—तदर्रो (अल्लाह की बारगाह में गिड़गिड़ाना) और दुआ, 6— कसरत से इस्तिगफार करना, 7—लग्व और बेहूदा बातों और किज़्ब व गीबत वगैरह से बचना,
नोट— आमाले कल्बिया, जुबान के आमाल, अच्छे आमाल के फवायद व मुनाफे, आखिरत में उनकी नेक जज़ा व सवाब, बुरी आदतें और उनके नुक्सानात, और आखिरत में जो उन पर सजा और अजाब हैं उसकी तफसील अगर आप को दरकार है तो इमाम गजाली अलैहिर्रहमा की किताब अहयाउल उलूम और कीमियाये सआदत जो उर्दू में भी दस्तियाब हैं, या मस्नवी शरीफ मौलवी मअनवी मौलाना जलालुद्दीन रूमी रहमतुल्लाह अलैहि या दूसरे सूफिया—ए—कामिलीन की तसव्वुफ व अख्लाक पर मुश्तमिल किताबों का मुताअला कीजिये। या इस हकीर की गैर मतबूआ आने वाली किताब फजाइले इस्लाम का इन्तजार कीजिये। और तक्मील के लिए अल्लाह रब्बुलइज्जत से दिल की गहराइयों, और गहराइयों से दुआ कीजिये। और अगर खुश्किस्मती से इस ज़माने में किसी कामिल की सोहबत मैयस्सर आ जाये तो अपने लिए गनीमत जानिये क्योंकि मुताला से ज्यादा मोअस्सिर और मुफीद है कामिल की सोहबत।

किस्मे सोम

किस्में सोम में ईमान के वह औसाफ या आमाल हैं जिनका तअल्लुक आज़ा व जवारेह से है या अपनी जुबान में यूं कह लीजिये कि वह बाकी बदन के आमाल हैं। उन आमाल की कुल चालीस किस्में या चालीस शाखें हैं लेकिन मुतअल्लिक के ऐतबार से उनकी तीन किस्में हैं।
पहली किस्म— इसमें वह आमाले बदन हैं जिनका तअल्लुक इन्सान

का अपनी ज़ात से है उसकी सोलह शाखें हैं ।

1– पाकी हासिल करना– उसमें बदन की पाकी, लिबास की पाकी, मकान व जगह की पाकी, और बदन की ही पाकी में वुजु भी शामिल है और गुस्ले जनाबत और औरत का हैज व निफास से गुस्ल करना भी उसमें शामिल है।

2– नमाज का कायम करना– यानी नमाज को बिला नागा और बिला कजा पाबन्दी से वक्त पर अदा करना, और उसके साथ साथ उसके फरायज व शरायत, वाजिबात और सुन्नतो मुस्तहिब्बात का भी लिहाज रखना, और उन शाखो के अमल में फर्ज व वाजिब, सुन्नत, नफ़्ल और कजा वगैरह सभी शमिल हैं।

3–जकात का अदा करना– उसमें सदका–ए–फित्र और दीगर खैरात, लोगों को खाना खिलाना, महमान नवाजी करना, और नौकरों ओर मुलाजिमों के साथ रियायत बरतना भी शामिल है।

4– रोजे रखना– फर्ज हो नफ्ली

5– हज करना– उसमें उमरा शामिल है और ज्यारत रौजा–ए–अक़्दस वगैरहा।

उसके तुफैल हज भी खुदा ने करा दिये

अस्ल मुराद हाजिरी उस पाक दर की है

6– एत्काफ़– रमजान के अशरये अखीरा का एत्काफ़ और उसमें लैलतुल–कद्र की तलाश।

तन्बीह–इन छः आमाल या ईमान की छः शाखों की तफ्सील जानने के लिए आप बहारे शरीअत, निजामे शरीअत और कानूने शरीअत या दीगर उल्माये अह्ले सुन्नत की फिक्ही किताबों का मुताला कीजिये।

7– हिजरत– दीन की हिफाजत के लिए घर छोड़ना, या दारूलकुफ्र से दारूल इस्लाम की तरफ हिजरत करना,

8– नज़रों और मन्नतों का पूरा करना,

9– अपनी कसमों की हिफाजत व निगरानी करना।

10– अगर कसम वगैरह तोड़ दो तो उसके कफ्फारे को अदा करना।

11– नमाज या नमाज के अलावा मर्दो और औरतों सबको अपनी अपनी हदों से सत्रे औरत करना, यानि "हिजाब इज्जत या

जिल्लत" का मुताला करें, जो उर्दू और हिन्दी में मुफ्त दस्तियाब हैं।

12– कुर्बानी करना–: 13– जनाजे का ऐहतराम करना और उसके जुमला उमूर का लिहाज रखना।

14– कर्ज देना– 15–मामलात और लेन देन में सच्चाई और सफाई से पेश आना और सूद व रिश्वत से बचना।

16–शहादत व गवाही के मुतालबे पर सच्ची गवाही देना और हक को न छुपाना।

दूसरी किस्म

किस्मे सोम की दूसरी किस्म में वह आमाल या ईमान की वह शाखें हैं जिनका तअल्लुक इन्सान का अपने मुतअल्लिकीन के साथ सुलूक व बर्ताव से है। आमाल की छः शाखें हैं 1–अक्द व निकाह के जरिये मोमिन का अपने आपको हराम कारी वगैरह से बचाना। 2– अहलो अयाल के साथ हकूक की रियायत करना, हुदूदे शरीअत में रहकर उनका अदा करना, दौलत की फरावानी से इस्राफो तब्जीर की हद तक न पहुंचना, जैसा कि आज के जमाने मे हो रहा है।, 3–वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक करना, उनके साथ नरमी बरतना और फरमा बरदारी से पेश आना, وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا की अमली तफसीर बन जाना। 4– औलाद की इस्लामी माहौल और इस्लामी तहजीब व कल्चर की रौशनी में अच्छी तरबियत करना। 5– सिला रहमी करना और रिश्ते जोड़ना, जिसकी किताब व सुन्नत में सख्त ताकीद आयी है। रिश्ते तोड़ने से हत्तलमकदूर बचना।

6– बड़ों की इताअत व फरमा बरदारी करना।

तीसरी किस्म

इसमें वह आमाल और इन्सानी अहवाल या ईमान की शाखें हैं जिनका तअल्लुक आम लोगों से है। इस तीसरी किस्म की अठारह शाखें हैं (1) फर्ज शनासी–यानी जिन चीजों की इन्सान को जिम्मेदारी या हुकूमत व क्यादत मिली है ख्वाह वह मुल्क व सल्तनत में हाकिम व अफसर हो या अपने अहले खाना का हाकिम व जिम्मेदार सबके साथ इन्साफ से पेश आना

وَكُلُّكُمْ رَاعٍ وَكُلُّكُمْ مَسْئُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهٖ यानी तुम में से हर एक हाकिम है और हर हाकिम से उसके मातहतों के बारे मे पूछा जायेगा।

2– हक जमाअत की पैरवी करना और उसका साथ देना ।

3– शरीअत के मुआफिक हुक्म देने वाले हाकिमों की इताअत करना।

4– लोगों के दरमियान इस्लाह चाहना, और उनकी इस्लाह में कोशिश करना ।

5–नेक काम में दूसरे लोगों की मदद करना जिसका कुरआन में تَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى के जरिये हुक्म दिया गया यानी नेकी और परहेज़गारी में एक दूसरे की मदद करते रहो।

6–अमरबिल्मारूफ और नहीं अनिलमुन्किर (यानी नेक कामों का हुक्म देना और बुरी बातों से रोकना) उसी में फी ज़माना दावत व तब्लीग़ और वआज व नसीहत में दाखिल है। बशर्ते कि बिल तम्आ और बिला नजराना तै किये हों ।

7– शरीअत की हदों को कायम करना।

8– जिहाद करना और इस्लामी सरहदों की हिफाजत करना।.

9– अमानतें अदा करना।10–कर्ज लेने वाले को मुकर्रर वक्त पर अदा करना। 11– पड़ोसियों के हुकूक अदा करना और उनकी इज्जत व आबरू की हिफाजत और उनका एहतराम करना। पड़ोसियों के हकूक की अदायगी की हदीस में सख़्त ताकीद आयी है।

12–मामलात में हुस्ने सुलूक करना। और उसी शाख में जायज तरीके से माल जमा करना। 13–अपने और अपने अहलो अयाल पर बुख़्ल और इस्राफ से बचते हुये माल खर्च करना। 14 – सलाम करना और सलाम का जवाब देना। 15– छींकने वाले की छींक का يَرْحَمُكَ اللّٰهُ से जवाब देना। 16–अल्लाह रब्बुल इज्जत के बन्दों को या उसकी मख्लूक को जरर व नुक्सान से बचाना।

17–खुद को लहव व लइब और खेल कूद से बचाना।

18–रास्ते से तकलीफ दह चीज को हटाना।...... यह हैं ईमान की कुल सतत्तर(77) शाखें या औसाफ व आमाल।

(उम्दतुलकारी जि–2)

तन्बीह

किस्में सोम की तीनों किस्मों की तफसील व अहकाम मालूम करने के लिए "किताबुन्निकाह" "किताबुत्तलाक" और "किताबुलबुयूउ" का मोअतबर उल्मा की मोअतबर किताबों में मुताला करे। या जो बा अमल आलिम है उनकी तरफ रूजुअ करें।

ईमान की इन सतत्तर(77) शाखों को एक दूसरे में जम करके घटा भी सकते हैं और एक शाख और अमल में कई कई अमल शामिल हैं तो तादाद व शुमार में बढ़ाकर 100 से ऊपर भी हो सकते हैं जैसा कि एक हदीस में तौहीद व ईमान के साथ जन्नत के दरवाजो पर चन्द आमाल या ईमान की शाखों को अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुलाहिजा फरमाया।

तौहीद और उसकी शाखें

अल्लाह तआला के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इरशाद फरमाते हैं मेराज की रात जब मेरा गुजर सातवें आसमान पर हुआ तो मैंने जन्नत को देखा कि जन्नत के हर फाटक पर कल्मये तौहीद के साथ चार चार मुफीद काम की बातें लिखी हुई है।

पहले फाटक पर लिखा था لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ और दुनिया और आखिरत में आराम से जिन्दगी बसर करने के लिए चार बातें 1—कनाअत से जिन्दगी गुजारना। 2—अदावत व दुश्मनी से बचना। 3—हसद से दूर भागना 4—फुकरा व मसाकीन और नेकों की सोहबत में बैठना।

और दूसरे दरवाजे पर लिखा हुआ था لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ और उसके नीचे यह तहरीर था जो दुनिया व आखिरत में खुशी चाहता है। वह चार चीजों पर अमल करे।

1—यतीमों के सर पर हाथ फेरे 2—बेवाओं के साथ हुस्ने सुलूक करे 3—मुसलमानों की जरूरतों को पूरा करने में कोशिश करे। 4— फुक्रा व मसाकीन की सोहबत अख्तियार करे।

तीसरे दरवाजे पर लिखा हुआ था। لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ और उसके नीचे तहरीर था हर चीज के लिए एक जरिया होता है और तन्दुरूस्ती और सेहत के लिए चार चीजे जरिया हैं। 1—गिजा और खुराक में कमी करना। 2—गुफ्तगू कम और

जरूरत पर करना। 3—औरत के साथ मुजामअत में कमी और एतेदाल बरतना। 4—सोने मे कमी और दरमियान रवी अख्तियार करना।

और चौथे बाब पर लिखा हुआ था। لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ और उसके नीचे यह चार चीजें दर्ज थीं। 1— जो शख्स अल्लाह तआला और कयामत के दिन पर ईमान रखता है उसको चाहिये कि वह अपने मां बाप की ताजीम करे। 2—जो शख्स अल्लाह पाक और कयामत पर ईमान लाया वह अपने पड़ोसी की ताजीम करे। 3—जो शख्स अल्लाह अज्जावजल्ला और कयामत पर ईमान रखता हो वह अपने मेहमान की ताज़ीम करे। 4— जो शख्स अल्लाह रब्बुलइज्जत और क़यामत पर ईमान लाया जब बोले तो अच्छी बातें बोले वरना चुप रहे।

और पांचवे दरवाजे पर لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ के साथ यह चार बातें लिखी हुई थी। 1— जो शख्स किसी पर जुल्म न करे जुल्म न किया जायेगा। 2—जो क़िसी को गालियां न देगा वह गालिया न दिया जायेगा। 3—जो शख्स किसी की तौहीन न करे तो वह तौहीन न किया जायेगा। 4—जो दुनिया और आखिरत में सलामती चाहे उसको चाहिये के لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ का वजीफा लाजिम कर ले।

और छटे दरवाजे पर कल्मये तौहीद لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ के साथ लिखा हुआ था। 1—जो शख्स चाहता है कि नजअ के आलम में उसके साथ आसानी की जाये तो उसको चाहिये कि वह लोगों के साथ अच्छी गुफ्तुगू करे। 2—जो शख्स चाहता है कि उसकी कब्र पाक व साफ रहे और जिस्म को कीड़े न खाये तो वह अल्लाह की मस्जिदों को साफ रखे। 3—जो शख्स यह चाहे कि वह जमीन के नीचे तरो ताजा रहे और उसका जिस्म बोसीदा न हो तो उसको चाहिये कि खुदा की मस्जिदों को आबाद करे। 4—जो शख्स कब्र के बिच्छुओं से महफूज रहना चाहे उसको चाहिये कि वह खुदा की मस्जिदों को रोशन और मुनव्वर रखे।

सातवें दरवाजे पर لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ के साथ यह इबारत

लिखी हुई थी। चार आदतों से इन्सान का दिल मुनव्वर रहता है। 1–बीमारों की अयादत व मिजाज पुर्सी । 2–जनाजे की नमाज पढ़ाने । 3–मय्यत के लिए कफन खरीद कर देने। 4–दुनियवी ख्वाहिशात और लज्जतों से नफ्स को रोकने।

आठवें दरवाजे पर لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ के साथ लिखा था। जब घर में दाखिल हो तो चार आदतें अख्तियार करो 1–सच बोलना। 2–सखावत करना 3–हुस्ने अख्लाक से पेश आना। 4–लोगों से परेशानियों और मुसीबतों को दूर करना।

मजकूरा बाला हदीस में सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तकरीबन बत्तीस अच्छी आदतों और उम्दा खसलतों का तजकिरा फरमाया चूंकि यह प्यारी प्यारी आदतें सब ईमान की शाखें हैं, ईमान और कलमये तौहीद पर कायम रहना यह इन शाखों की जड़ है, जब जड़ मजबूत और तरो ताजा रहेगी तो शाखें भी सरसब्जो शादाब रहेंगी इसीलिए अल्लाह तआला ने जन्नत के दरवाजे पर अच्छी आदत के साथ कलमये तौहीद का तजकिरा फरमाया कि इन आमाल का सच्चा फायदा इमान वालों के लिए है।

कुरआन के आईने मे मोमिन कौन

बहरहाल जब आप आमाले कल्ब और आमाले कालब(यानी बदन)दोनों पर अमल करेंगे तभी आप मोमिने कामिल करार पायेंगे जैसा कि अल्लाह रब्बुलइज्जत अपने कलामे करीम में इरशाद फरमाता है

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا لَهُمْ دَرَجَاتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝

तर्जुमा– ईमान वाले तो वही हैं कि जब अल्लाह को याद किया जाये तो उनके दिल डर जायें और जब उन पर उसकी आयतें पढ़ीं जायें तो उनका ईमान तरक्की पाये और अपने रब ही पर भरोसा करें(और)वह जो नमाज कायम करें और जो हमने उन्हें दिया है उससे (मेरी राह) में खर्च करें यही सच्चे मोमिन हैं उनके लिए (दुनिया व अखरत) दर्जे हैं उनके रब के पास। और बख्शिश है और करामत व (इज्जत)

वाली रोजी है। कहीं अल्लाह तबारक व तआला ने फरमाया إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا यानि मोमिन तो वही हैं जो खुदा और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाये फिर किसी तरह के शक मे न पड़े। इसी तरह की बहुत सी आयते मुबारका कुरआने करीम में मौजूद है। जिनमें ईमान वालों की कुछ सिफात को बयान किया गया है उनमे से बहुत सी आयते मुबारका का आगाज लफ्जे इन्नमा ही से किया गया हैं। अरबी का मोअल्लिम और हर माहिर तालिबे इल्म जानता है कि लफ्जे इन्नमा हस्र के लिये आता है। जिस आयत के मफहूम व मतलब में बहुत ज्यादा वजन और जोर पैदा करना मंजूर होता है। वहां इस कलमें को जिक्र किया जाता है। हमारी जिक्र की हुई दोनों आयतों में आगाज इन्नमा से किया गया। अब इस लफ्ज को शुरू मे लाने से मफहूम यही बनता है कि फकत मोमिन वही हैं जिनके अन्दर इन आयतो में जिक्र की हुई सिफात और खुसूसियात मौजूद हों। कहीं पर अल्लाह रब्बुलइज्जत ने फरमाया, मोमिन वह हैं जो अल्लाह पर, कयामत के दिन पर, फरिश्तों पर, किताबों पर, और पैगम्बरों पर ईमान लाये। सूरऐ बकर की इस आयत में पांच बातों पर ईमान लाने वाले को मोमिन कहा गया। कुरआन करीम और हदीस नबवी शरीफ में मोमिन की मुख्तलिफ सिफात और उसके मुख्तलिफ आमाल को मुख्तलिफ मकामात पर बयान किया गया है। इन्हीं सब सिफात और आमाल को ईमान की शाखें बताया गया है। मैने जो अभी आयत जिक्र की उसमें मोमिन के दोनों किस्म के आमाल यानि कल्बी और बदनी बयान फरमाये अल्लाह रब्बुलइज्जत ने आखिर में फरमाया जो इन आमाले कल्बिया और बदनिया से मौसूफ और इन सिफात के जेवर से आरास्ता होगा वही हकीकत में कामिल और सच्चा मोमिन है।

आयत का खुलासा

इस आयत में रब तबारका व ताआला ने कामियाब और कमिल मोमिन की पांच सिफात बयान फरमाई हैं पहली तीन कल्बी और रूहानी है। 1–दिलों का खौफ 2–ईमान व यकीन में इजाफा और उसकी पुख्तगी, 3–अल्लाह तबारका व ताआला की जात पर

कामिल तवक्कुल(भरोसा) इस तौर पर कि जब उनके सामने अल्लाह रब्बुलइज्जत का जिक्र किया जाये तो उनके दिल हैबते इलाही और जलाले इलाही से डर जायें। और जब उनके सामने अल्लाह रब्बुलइज्जत की आयतें तिलावत की जायें तो उनके ईमान की कैफियत में तरक्की हो जाये और उनके ईमान ताजा हो जायें, और वह लोग हमेशा रब ही पर भरोसा करते हैं। कभी अस्बाब पर अमल करके और कभी अस्बाब से बेनियाज होकर जैसा कि बदर वालों ने करके दिखया। और इस आयत में दो जिस्मानी सिफाअत का जिक्र किया गया जिनमें से एक बदनी और दूसरी माली है। (1)–उनकी इबादत व बन्दगी का आलम यह है कि वह हमेशा नमाज सही वक्त पर दिल लगाकर पढ़ते हैं। (2) उनकी सखावत का आलम यह होता है, कि अल्लाह तआला की दी हुई रोजी और अतिया से खर्च करते हैं। जो इन सिफाते मजकूरा या ईमान की शाखों से मौसूफ हैं वह हकीकत में सच्चे मुख्लिस कामिल मोमिन हैं। उन्हें रब तबारका व तआला की तरफ से दीन व दुनिया में रिफअतें और इज्जतें अता होती हैं। और सबसे बड़ी इज्जत उनके लिए यह है कि उनके लिए बख्शिश का परवाना है। और उनके लिए दुनिया और आखिरत में इज्जत व बुजुर्गी की रोजी है।

हदीसे खौफ

सैय्यदना हसन बस्री रजिअल्लाहु तआला अन्हु से किसी ने पूछा क्या आप मोमिन हैं? तो आप ने जवाब दिया ईमान दो तरह का होता है। एक तो अल्लाह तआला उसके फरिश्तों, उसकी किताबों, उसके रसूलों और कयामत का मानना, इस एतबार से हो तो मैं मोमिन हूँ। और दूसरा वह ईमान जो सूरह अनफाल की इस आयत ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ। मुझे पता नहीं कि मै इस ईमान से मुत्तसिफ हूँ कि नहीं (अल्लाहुअक्बर कबीरा) (तफसीरे कबीर व तफसीरे नईमी)

जिनके रूतबे हैं सिवा उनको सिवा मुश्किल है

यह है ईमान वालों के खौफ का आलम, मुसलमानों तुम इस किताब को पढ़ो और अपने ईमान को जांचो, ईमान के औसाफ और ईमान की शाखों मे से कितनी चीजों को तुम अपने अन्दर पाते हो? देखो

हसन बस्री रजीअल्लाहो तआला अन्हु सैय्यदुत्ताबिईन हैं। मौला अली के तरबियत याफ़्ता और मुरीद व खलीफा हैं और सैकड़ों सहाबा से मुलाकात किये हुये हैं मगर खौफ का आलम यह है अपने ईमान को जांचते और तौलते हैं तो रोते हैं। और हमें गुनाहों और बदकारियों के बाद भी कभी रोना नहीं आता।

تازہ خواہی داشتن گر داغ ہائے سینہ را
گاہے گاہے باز خواں این قصۂ پارینہ را

अगर आप अपने ईमान और अपने सीने के दागहाये इश्के मुहब्बत को मुनव्वर और तर–व–ताजा रखना चाहते हो तो कभी कभी तो कुरआन व हदीस की बातें और सहाबा व अहले बैत रिजवानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन और औलियाये इज्जाम रजिअल्लाहुतआला अन्हुम के इश्क व मुहब्बत की दास्तानों को पढ़कर अपने ईमान को जांच लिया करो। अम्बिया–ए–किरान अलैहिमुस्सलाम और औलिया–ए–इज्जाम रजिअल्लाहु तआला अन्हुम की दास्तानें और उनकी सीरतें पढ़कर हुस्ने अमल का जज्बा पैदा होता है। और अमले स्वालेह और हुस्ने किरदार से ईमान व अकीदे में जिला पैदा होती है। और उससे ईमान में पुख्तगी भी आती है। और हुस्ने अमल का असर मआशरे और समाज पर अच्छा पड़ता है। उखुव्वत व मुहब्बत, इत्तिफाक–व– इत्तिहाद, चैन व सुकून और खैरो बरकत यह सब हुस्ने अमल का नतीजा हैं।

हर अमल की एक खासियत और उसका एक असर है

अल्लाह रब्बुलइज्जत के दो किस्म के एहकाम और कानून हैं। (1)तकवीनी और तबई– जिनसे हमारा रात व दिन साबिका पड़ता है जैस चांद व सूरज का निकलना, उनका रौशन होना, पहाड़ो का बुलन्द होना, हवाओं का चलना, दरियाओं का बहना, आग का जलाना , पानी का ठंडा होना वगैरह यह सब अहकामे तकवीनिया हैं। (2) अहकामे शरीअह– जैसे ईमान लाना, कुफरो शिर्क न करना और नमाज व रोजा वगैरह इबादात की पाबन्दी करना। एसे ही हुस्ने अख्लाक, तवाजो करना, तकब्बुर न करना, शुक्र करना, ना शुक्री से बचना, अमानत व दयानत इख्तियार करना और ख्यानतो बददयानती से बचना वगैरह वगैरह। जिस तरह दवाओं और जड़ी बूटियों में से

हर एक की अलैहदा अलैहदा खासियत व तासीर होती है। इसी तरह इन्सान के आमाल मे से हर एक की एक खासियत व तासीर है। और इन आमाल का असर हमारे समाज और हमारे मुआशरे पर पड़ता है। अच्छे अमल हों तो अच्छा असर पड़ता है, बुरे हों तो बुरा। इस नुकते को कुरआन व हदीस में वाजेह तौर पर बयान किया गया है मसलन।

सूद से फितने व फसाद पैदा होते हैं। और तकब्बुर से अदावतें पैदा होती हैं। कुफ्रो शिर्क से इन्सान में कमजोरिया आती है। और ईमानो इताअत बन्दगी से दिल में कुव्वतो तवानाई और समाज में खैरो बरकत, मुहब्बत व उखुव्वत और इत्तेफाक व इत्तेहाद पैदा होता है। दुश्मनियां दूर होतीं है और अदावतें काफूर होती हैं। एक छटा और मामूली सा अमल ले लीजिये। अल्लाह के हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया आपस में सलाम खूब खूब करो। अब सलाम की तसीरो खासियत तो देखिये कि जो सलाम करता है उसमें तकब्बुर नहीं रहता क्योंकि सलाम में पहले तवाजो की अलामत है और जिसको सलाम किया जाता है उसके दिल में मुहब्बत पैदा हो जाती है। एक छोटा सा अमल है लेकिन मआशरे की इस्लाह के लिये उसकी दो तासीरें
कितनी अजीम हैं। इस किताबचे में जितने भी आमाल व औसाफ और शाखें वगैरह बयान की गयी हैं उनमें से हर अमल की एक अलैहदा तासीर है कोई करके तो देखे। अल्लाह रब्बुल इज्जत हमें उन सब आमाल की तासीरात को पढ़ने और समझने के साथ अमल की तौफीक अता फरमाये । आमीन

हुस्ने अमल और नुसरते इलाही

अल्लाह रब्बुलइज्जत फरमाता है। لا تهنوا ولا تحزنوا وانتم الاعلون ان كنتم مؤمنين: हम चूंकि अल्लाह रब्बुलइज्जत के मोमिन बन्दे कहलाते हैं, हमने لا الٰہ الا اللہ محمد رسول اللہ पढ़कर मुसलमान होने का दावा किया है और हम अपने आप को मुसलमान समझते भी हैं तो हमने अपने आप को मुसलमान कह कर अपने ऊपर अल्लाह रब्बुलइज्जत के हुक्म की तामील को लाजिम कर लिया और उसके प्यारे हबीब मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह की इत्तिबा व पैरवी और गुलामी व ताबेदारी की पाबन्दियां कुबूल कर ली हैं। लिहाजा अल्लाह रब्बुलइज्जत का मामला हम मुसलमानों के साथ बेहतर और उसकी नुसरत व मदद हमारे साथ उसी सूरत में

होगी कि जब हम अल्ला रब्बुलइज्जत हाकिमें मुतलक और उसके प्यारे हबीब रसूलुल्लाह रहमतुल्लिल्आलमीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एहकाम पर सर झुका देंगे और उनके बताये हुये तरीकों पर चलेगें وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِيْنَ में इसी नुक्ते को बयान किया गया है। अब हम अगर ईमान व अमल में गिर जायेंगे तो दुनिया में इज्जत कहां पायेंगे? चूंकि दुनिया दारूलअस्बाब है। यहां हुस्ने तदबीर में जो आगे होगा वह गालिब रहेगा। अब हम दुनियवी तदबीरों में भी कमजोर और ईमान व अमल में भी कमजोर। तो नुकसान कौन उठायेगा? अगर हमारी तदबीरें और अस्बाब कमजोर हों तो कम से कम हमारे ईमानो अमल तो मजबूत हों।

क्या बदर वालों की दुनियवी तदबीरें कमजोर नहीं थी? लेकिन हुस्ने अमल और ईमान की पुख्तगी का क्या आलम था? कि तीन सौ तेरह (313) कमजोरों और निहत्थों को अल्लाह रब्बुलइज्जत ने एक हजार पर गालिब कर दिया। जब भी दुनिया में मुसलमानों ने अपने परवर दिगारे आलम के एहकाम पर सही तौर पर अमल किया और अल्ला तबारका व ताआला के हबीब सल्लल्लाहु तआलाअलैहि वसल्लम की पैरवी के मियार पर पूरे उतरे। तो खुदा की तरफ से उनकी दुनिया में मदद की गयी। और उन ईमान वालों की खातिर उनके दुश्मानों को सजा भी दी गयीं। इस्लामी तारीख में ऐसे बहुत से मवाके आये, कि जब ईमानो अमल में कामिल लोगों की मदद की खातिर हकायक और मामलात तक को बदल दिया गया। और मुकर्ररा क़ायदों में तब्दीली कर दी गयी। खुदा वन्दे कुद्दूस की तरफ से जब मदद का फैसला होता है। तो ऐसा ही होता है। खैबर से वापसी पर मकामे सहेबा पर डूबे सूरज को वापस कर देना, चांद के दो टुकड़े कर देना, खन्दक के मौके पर एक बच्चे और चन्द रोटियों से 1400 को सैराब कर देना और मदीने में मस्जिदे नबवी के मिम्बरे रसूल पर बैठे जानशीने नबी हजरते उमर इब्ने खत्ताब रजिअललाहुतआला अन्हु की आवाज को तीन सौ(300) मील दूर बिला मोबाइल व फोन के पहुंचा देना।

क्या यह हक़ायक व उसूल की तब्दीली नहीं? यह तब्दीली किस के लिए की गयी है? वह भी तो कलमा पढ़ने वाले ही थे। मोजिजह और